

वैदिकवाङ्मय

परीक्षा दृष्टि

(NTA, UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GIC-Lecturer, GDC, Higher Education
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी)

लेखक
सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज
www.sanskritganga.org

ISBN : 978-81-938257-1-6

☛ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☛ **वितरक**

* **युनिवर्सल बुक्स**
अल्लापुर, प्रयागराज
* **राजू पुस्तक केन्द्र**
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) मो० 9453460552

☛ संस्करण - मई-2019

☛ **मूल्य – ₹ 145 /-** (एक सौ पैंतालीस रुपये मात्र)

☛ **पृष्ठविन्यास** – कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, दारागंज, प्रयागराज

☛ **मुद्रक** – एकेडमी प्रेस, दारागंज, प्रयागराज

भूमिका

प्रिय संस्कृतमित्राणि

नमः संस्कृताय!

वेद भारत की अस्मिता है। वेदों के बिना भारत का अस्तित्व नगण्य है। वेदों के पठन-पाठन पर हमारे ऋषि-मुनियों ने सदैव अत्यधिक बल दिया है, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण वैदिक मार्ग का अनुसरण करने में ही है। मनु ने वेदों को सभी धर्मों का मूल बताया है - 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। वेदों में मानवमात्र के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है -

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

पतञ्जलि भी निःस्वार्थभाव से वेदों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते हैं - 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।' वेदों को प्रमाणरूप में स्वीकार करना ही एक सच्चे आर्य का लक्षण है - 'प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु।' परन्तु आज की पीढ़ी वैदिकवाङ्मय के अमूल्य ज्ञान से अनभिज्ञ प्राय है, जो कि भारत की अस्मिता के लिए अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक अपने इष्ट मित्रों के साथ विचार कर एक ऐसी पुस्तक का निर्माण करने का सङ्कल्प लिया गया, जो आज की युवा पीढ़ी को वैदिक वाङ्मय को सरलतम भाषा में परिचित करा सके। इस पुस्तक के माध्यम से छात्र वैदिक वाङ्मय के सारगर्भित स्वरूप से परिचित हो सकेगा।

चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, इतिहासवेद), छः वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) वेदों के ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक तथा उपनिषदों के ग्रन्थीय स्वरूप को क्रमशः महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं सहित सरलतम रूप में प्रस्तुत

किया गया है। वैदिक देवताओं के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए अद्यावधि लिखे गये वेदभाष्यों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। वैदिक वाङ्मय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की सूची इस पुस्तक के महत्त्व को और अधिक बढ़ाती है। **यह पुस्तक UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GDC, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगी - ऐसा मेरा विश्वास है।**

पङ्कजकुमार शर्मा, सत्यप्रकाश साहू, सुमन सिंह, अम्बिकेश प्रताप सिंह, कविता सिंह, नीलम गुप्ता, नितीश उपाध्याय, स्नेहा पाण्डेय, महिमा यादव, कृष्णकुमार, राजेश तिवारी, श्यामकिशोर मिश्र, सन्तोष यादव 'साहब' आदि मित्रों के निरन्तर सहयोग व चिन्तन से ही यह कार्य पूर्णता को प्राप्त कर सका है। इस ग्रन्थ को लिखते समय पूरी सावधानी के साथ यह प्रयत्न किया गया है कि पाठकगण वैदिकवाङ्मय के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं से अनायास परिचित हो सकें।

श्रीमान् अनन्त प्रसाद त्रिपाठी (गहनौआ, रीवा म.प्र.) एवं प्रो. ललितकुमार त्रिपाठी (प्रयागराज) के श्री चरणों में प्रणाम करते हुए ये आशा है कि यह ग्रन्थ निश्चित ही पाठकों की जिज्ञासा को पूर्णकर वेदों के प्रति उन्हें आकृष्ट करेगा।

विनयावनत

सर्वज्ञभूषण

❑❑

विषयसूची

1. वेदों का रचनाकाल एवं ऋग्वेदीय संवाद सूक्त 7

ऋग्वेद के संवाद सूक्त

(क) पुरूरवा उर्वशी संवाद (10.95) 10

(ख) यम-यमी संवाद (10.10) 14

(ग) सरमा पणि संवाद (10.108) 16

(घ) विश्वामित्र नदी संवाद (3.33) 18

2. ऋग्वेद 21

3. यजुर्वेद 36

4. सामवेद 48

5. अथर्ववेद 58

6. ब्राह्मण ग्रन्थ 68

7. आरण्यक ग्रन्थ 92

8. उपनिषद् ग्रन्थ 98

9. वेदाङ्ग 106

10. वैदिक देवता 132

11. वेदों के भाष्य एवं भाष्यकार 141

12. वैदिक सूक्त संग्रह 152

1. अग्निसूक्त (1.1) 152

2. वरुण सूक्त (1.25) 153

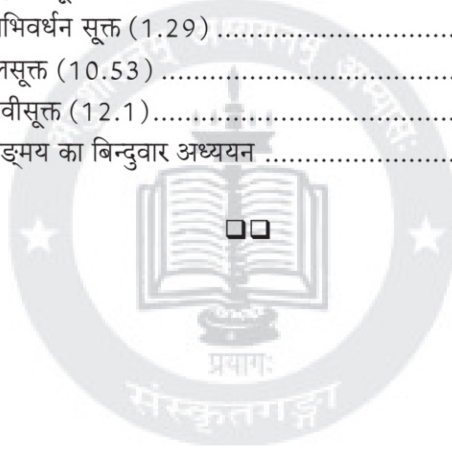
3. सूर्य सूक्त (1.115) 155

4. इन्द्र सूक्त (2.12) 156

5. उषस् सूक्त (3.61) 159

6. पर्जन्य सूक्त (10.71) 160

7. अक्षसूक्त (10.34) 162
8. ज्ञानसूक्त (10.71) 164
9. पुरुषसूक्त (10.90) 166
10. हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121) 168
11. वाक्सूक्त (10.125) 170
12. नासदीय सूक्त (10.129) 171
शुक्लयजुर्वेद के सूक्त
13. शिवसङ्कल्प सूक्त अध्याय-34 (मन्त्र 1 से 6 तक) 172
14. प्रजापति सूक्त, अध्याय-23 (मन्त्र 1 से 5 तक) 173
अथर्ववेद के सूक्त
15. राष्ट्राभिवर्धन सूक्त (1.29) 174
16. कालसूक्त (10.53) 175
17. पृथिवीसूक्त (12.1) 177
13. वैदिक-वाङ्मय का बिन्दुवार अध्ययन 179



❑❑

९. वेदाङ्ग

- वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है। उन्हे वेदाङ्ग कहते हैं।
- वेदाङ्ग का अर्थ है- वेद के अङ्ग।
- 'वेदाङ्ग' में अङ्ग शब्द का अर्थ है 'वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।' 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि।'
- वेदाङ्गों के द्वारा मन्त्रों का अर्थ उनकी व्याख्या तथा यज्ञ में उनके विनियोग आदि का बोध होता है।
- वेदाङ्गों की संख्या छः है -

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

'छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।। (पा०शि०41-42)'

1. छन्द	पाद (पैर)
2. कल्प	हस्त (हाथ)
3. ज्योतिष	चक्षु (नेत्र)
4. निरुक्त	श्रोत्र (कान)
5. शिक्षा	घ्राण (नाक/नासिका)
6. व्याकरण	मुख (मुँह)

- वेदाङ्गो का सर्वप्रथम उल्लेख मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के अन्तर्गत चार वेदों के नाम के बाद हुआ।
- उपनिषदों में दो प्रकार की विद्या का उल्लेख प्राप्त होता है-पराविद्या,अपराविद्या। अपराविद्या के अन्तर्गत चार वेद तथा छः वेदाङ्ग आते हैं।

शिक्षा

- शिक्षा का अर्थ है- वर्णोच्चारण की शिक्षा देना
- 'स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा' अर्थात् जिसमें स्वर वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है उसे शिक्षा कहते हैं ।
- शिक्षा को वेद पुरुष का घ्राण कहा गया है **'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य'**।
- तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा के छः अङ्गों का उल्लेख है जो हैं- वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान।

वर्ण-

- वर्णोऽकारादिः अर्थात् अकार आदि को वर्ण कहते हैं । वेदों के ज्ञान के लिए वर्णों का ज्ञान होना आवश्यक है।
- वेदों में 52 वर्ण प्राप्त हैं– स्वर 13,स्पर्श 27, य र ल व तथा श ष स ह - 8, विसर्ग, अनुस्वार, जिह्वामूलीय उपध्मानीय- एक एक वर्ण होते हैं।
- पाणिनीय शिक्षा में संस्कृत में वर्णों की संख्या 63 है। संवृत और विवृत अ को अलग-अलग मानने पर 64 वर्ण हो जाते हैं स्वर की संख्या तीन है- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।
- स्वर का अभिप्राय स्वराघात है स्वर भेद से अर्थ भेद होता है।
- **मात्रा -** स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं।
- ह्रस्व,दीर्घ,प्लुत के भेद से मात्रा के तीन भेद हैं।

ह्रस्व	-	**एक मात्रा**
दीर्घ	-	**दो मात्रा**
प्लुत	-	**तीन मात्रा**

- व्यञ्जन की आधी मात्रा होती है।

  पलक गिरने में जितना समय लगता है उतने समय को एक मात्रा कहते हैं- नारदीय शिक्षा

बल-

- वर्णों के उच्चारण में होने वाले प्रयत्न और उनके उच्चारण स्थान को बल कहते हैं।
- प्रयत्न दो हैं - आभ्यन्तर तथा बाह्य।
- जिन स्थानों से टकराकर वायु बाहर निकलती है उसे 'स्थान' कहते हैं।
- स्थान आठ हैं- हृदय,कण्ठ,शिर, जिह्वामूल,दन्त,नासिका,ओष्ठ,तालु।

साम-

- वर्णों के दोष रहित एवं शुद्ध माधुर्य आदि गुणों से युक्त उच्चारण को 'साम' कहते हैं। साम का अभिप्राय है- समविधि से सुस्पष्ट एवं सुस्वर से उच्चारण।

सन्तान-

- सन्तान का अर्थ है संहिता। पदों की अतिशय सन्निधि को संहिता कहते हैं इसके लिए सन्धि नियमों को जानना और उनका यथास्थान उपयोग करना।

शिक्षाग्रन्थ-

- उपलब्ध शिक्षाग्रन्थ 35 हैं। 32 शिक्षा ग्रन्थों का एक संकलन 'शिक्षा-संग्रह' नाम से प्रकाशित हुआ।
- इसमें ध्वनिविज्ञान से सम्बन्ध उनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए गए हैं।

पाणिनीय शिक्षा-

- पाणिनीय शिक्षा वैदिक और लौकिक दोनों के लिए उपयुक्त है।
- पाणिनीय शिक्षा में साठ श्लोक हैं।
- पाणिनीय शिक्षा में वर्णों की संख्या,उच्चारण-प्रक्रिया का ध्वनि-शास्त्रीय वर्णन,स्थान और प्रयत्न का विवरण,संवृत-विवृत,घोष-अघोष,पाठक के गुण-दोषों का वर्णन आदि प्राप्त होता है।
- **भारद्वाज शिक्षा-** पदों की शुद्धता तथा ध्वनि भेद से उदात्त आदि स्वरों में भेद का वर्णन किया है।
- **याज्ञवल्क्य शिक्षा-** याज्ञवल्क्य शिक्षा में 232 श्लोक हैं।

* इसमें वैदिक स्वरों का विवेचन है।
* वर्णों के भेद,स्वरूप,परस्पर साम्य,वैषम्य,लोप आगम-विकार,प्रकृतिभाव आदि का वर्णन है।

- **प्रातिशाख्य प्रदीप शिक्षा-**
  इसमें स्वर-वर्ण आदि की शिक्षा का विवेचन तथा प्राचीन वैयाकरण के मतों का उल्लेख प्राप्त होता है।
- **नारदीय शिक्षा-**
  नारदीय शिक्षा में सामवेद के स्वरों का विस्तार से वर्णन है।
- **अन्य महत्त्वपूर्ण शिक्षा ग्रन्थ-** व्यासशिक्षा, वशिष्ठशिक्षा ,कात्यायनी शिक्षा, पाराशरी शिक्षा,माण्डव्य शिक्षा,माध्यन्दिनी शिक्षा,वर्णरत्नप्रदीपिका,केशवी शिक्षा,स्वरांकन शिक्षा,स्वरभक्ति लक्षण शिक्षा।

व्याकरण वेदाङ्ग –

वेद को व्याकरण का मुख माना जाता है – **'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'।**

- जिस शास्त्र के द्वारा शब्दों के प्रकृति प्रत्यय का विवेचन किया जाता है उसे व्याकरण कहते हैं **'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्'**
- व्याकरण शास्त्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है- वैदिक व्याकरण तथा लौकिक व्याकरण।
- व्याकरण शास्त्र में पद-पदार्थ, वाक्य-वाक्यार्थ आदि का विवेचन प्राप्त होता है।
  ऋग्वेद के एक मन्त्र में व्याकरण शास्त्र को एक वृषभ के रूपक में बाँधा गया है-

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आविवेश।।

* चत्वारि शृंगा - नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात।